अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष : 2, अंक : 2

जून 2024

पर्यावरण और अर्थशास्त्र

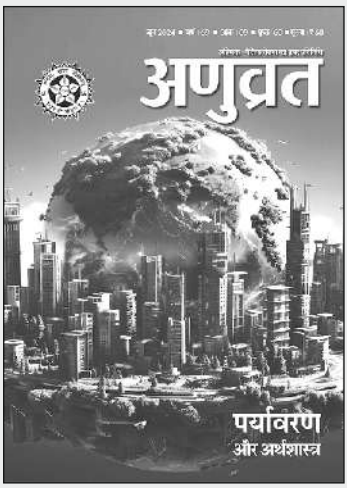

वर्ष: 69 अंक: 9

जून 2024

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

ई-मैगज़ीन संयोजक
मनोज सिंघवी

पत्रिका प्रसार संयोजक
सुरेन्द्र नाहटा

आचार्य श्री तुलसी जी अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से मानव कल्याण के लिए मानव समुदाय को जागृति का सन्देश दे रहे हैं। वह जागृति है नैतिकता की, मनुष्य के चरित्र निर्माण की। देश के जन-जीवन के विकास के लिए मानव चरित्र पर बहुत कुछ निर्भर करता है। इसी चरित्र के आधार पर हमें संस्कृति के गौरव की गरिमा प्राप्त हुई है। मनुष्य के जीवन के लिए मनुष्य का चरित्र उसका एक मूल्यवान अलंकार है।

- बी.डी. जत्ती

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

पर्यावरण संरक्षण किसकी है जिम्मेदारी?

पर्यावरण का क्षरण आज दुनिया के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। जैसे-जैसे जागरुकता बढ़ रही है, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रयास भी बढ़ रहे हैं। लेकिन पिछली एक सदी में हमने पर्यावरण का जितना नुकसान किया है, ये प्रयास नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं।

सामान्यतः पर्यावरण को हुए नुकसान में विकसित देशों को सबसे अधिक जिम्मेदार माना जाता है। अमेरिका में हुए एक शोध में 65 प्रतिशत नागरिकों का मानना था कि सरकार इस दिशा में बहुत कम प्रयास कर रही है। कमोबेश यही स्थिति हर देश की है। पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में भारत की स्थिति अत्यंत चिंतनीय है। 2022 की 'एनवायर्नमेंटल परफॉरमेंस इंडेक्स' में भारत की रैंक 180 देशों में 180वीं है। यह अत्यंत चिंतनीय है।

सरकारें तब जागरूक होती हैं, जब जनता जागरूक होती है। ऐसे में अब हर नागरिक को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना होगा। यह तभी संभव है जब वह स्वयं अपने जीवन में पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील हो। अणुव्रत इसी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता की बात करता है। अणुव्रत आचार संहिता का यह व्रत - मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा - पर्यावरण को पहुँचाये जाने वाले किसी भी नुकसान के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध की आधारभूमि तैयार करता है।

आइए, पर्यावरण संरक्षण के लिए हम अपनी क्षमता के अनुरूप योगदान अवश्य दें ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ सुरक्षित रह सकें।

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

■ प्रेरणा पाथेय ■

पर्यावरण और अर्थशास्त्र

■ आचार्य तुलसी

आज संसार के सामने पर्यावरण की समस्या सबसे अधिक विकट है। एक समय था, जब आणविक अस्त्रों की समस्या भयावह थी। एक से एक शक्तिशाली और संहारक अस्त्रों का निर्माण हो रहा था। विश्व की महाशक्तियां आतंकित थीं। परस्पर संदेह का वातावरण था।

परमाणु अस्त्र बनाने की पहल सन् 1945 में अमेरिका ने की। उस वर्ष तीन बम बनाने की सामग्री एकत्रित हो गयी। एक बम का परीक्षण न्यू मेक्सिको में किया गया था। वह विश्व का प्रथम परमाणु परीक्षण था। शेष दो बम नागाशाकी और हिरोशिमा पर गिराये गये। सोवियत संघ ने पहला परमाणु परीक्षण सन् 1946 में किया। उसके बाद ब्रिटेन, फ्रांस और चीन ने भी अपनी परमाणु-क्षमता का परीक्षण किया।

विश्व में सन् 1945 से 1964 तक अठारह सौ से अधिक परमाणु परीक्षण किये जा चुके थे। लगभग पाँच सौ परीक्षण वायुमंडल में हुए और शेष परीक्षण भूमिगत हुए। परीक्षणों की प्रतिस्पर्धा के दुष्परिणाम देखकर परमाणु अस्त्रों के निर्माण और परीक्षण पर एक सीमा तक प्रतिबन्ध लगा। अब परमाणु अस्त्र-संकट की चर्चा काफी पुरानी पड़ गयी।

मुड़कर देखने का मौका

पर्यावरण की समस्या एक साथ उभरकर सामने आयी तो पूरा विश्व चौकन्ना हो गया। एक दृष्टि से यह अच्छा हुआ। इसके कारण लोगों की सोच तो बदली। अन्यथा इस विषय में कोई किसी की बात सुनने के लिए तैयार नहीं था। मनुष्य के सामने एक ही लक्ष्य था - जैसे-तैसे समृद्धि बढ़े, सब

सम्पन्नता के नशे में प्रकृति का असीम दोहन होने लगा। इससे पर्यावरण की समस्या पैदा हुई।

सम्पन्न बनें - यह नारा जितना लुभावना था, उतना ही घातक था। सम्पन्नता के नशे में प्रकृति का असीम दोहन होने लगा। इससे पर्यावरण की समस्या पैदा हुई। लोगों को सोचने का मौका मिला। छाया की तरह अनुगमन कर रही विनाश-लीला को मुड़कर देखने का मौका मिला। कोई बचेगा ही नहीं तो सम्पन्नता किस काम आएगी, इस चिन्तन ने मनुष्य को सजग किया।

समस्या की जड़

धरती और सूरज के बीच ओजोन छतरी है। यह पृथ्वी की सतह से दस से पन्द्रह किलोमीटर ऊपर समताप मण्डल में स्थित एक विरल परत है। यह अन्तरिक्ष से आने वाली पराबैंगनी जैसी हानिकारक किरणों को पृथ्वी तक पहुँचने से रोकती है। प्राकृतिक असन्तुलन और प्रदूषण के कारण उसमें छेद हो गये हैं। छेद बढ़ते जा रहे हैं। धरती पर जीवन की सुरक्षा ओजोन के कारण है। उसके क्षतिग्रस्त होने से जीवन के लिए खतरा बढ़ रहा है। स्थान-स्थान पर भूकम्प, बाढ़, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर रहे हैं।

मनुष्य जैसे दूरदर्शी, चिन्तनशील और विवेकशील प्राणी के लिए यह एक ऐसी चुनौती है, जिसका मुकाबला करना बहुत आवश्यक है। मुकाबले की तैयारी से पहले सोचें कि समस्या किस बात की है। मेरे अभिमत से समस्या की जड़ है मनुष्य का एकांगी दृष्टिकोण।

महावीर ने अनेकान्त दृष्टिकोण का मूल्य समझा, उसका उपयोग किया और उसके बारे में जानकारी दी, पर लोग

अपनी इस दार्शनिक और सांस्कृतिक धरोहर को भूलते जा रहे हैं। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की सीमाओं को अनदेखा कर एक ही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें और कुछ नहीं चाहिए, सम्पन्नता और सुविधा चाहिए। पता नहीं, यह दृष्टिकोण व्यक्ति को कहाँ ले जाकर छोड़ेगा। और इससे उसका कौन-सा हित सधेगा?

प्राकृतिक संपदा को खतरा

संसार में जो जैसे हैं, वे वैसे ही रहें तो कहीं कोई अव्यवस्था नहीं होती। प्राकृतिक व्यवस्था के साथ छेड़छाड़ करने से ही असंतुलन बढ़ता है।

प्रकृति के पास इतनी सम्पदा है कि मानव जाति कितना ही उपयोग करे, वह कभी समाप्त नहीं हो सकती। किन्तु जब से उसका दुरुपयोग होने लगा है, अतिमात्रा में दोहन होने लगा है, उसके अस्तित्व को खतरा हो गया है।

मैं अकेला कैसे पहन सकता हूँ?

महात्मा गांधी एक दृष्टिसम्पन्न व्यक्ति थे। शरीर से दुबले-पतले, पर मन से उदार। कम भोजन करते और कम कपड़े पहनते। केवल विचारों से ही नहीं, आचरण से सच्चे समाजवादी थे। उनका चिन्तन था कि जब देश के नागरिक भूखे रहते हैं, वे भरपेट कैसे खा सकते हैं? एक बार एक बालक गांधी के पास जाकर बोला- ''बापू! आप इतनी छोटी धोती और गंजी क्यों पहनते हैं? मैं आपको पूरी पोशाक देना चाहता हूँ।''

गांधी ने कहा- ''बेटा! तुम्हारे चाहने से क्या होगा, तुम्हारी माँ पूरी पोशाक नहीं देगी।''

बालक ने आग्रह करके कहा-''बापू! आप मना न करें। मेरी माँ बहुत अच्छी और उदार है। मैं जो कहूँगा, वही कर लेगी।''

गांधीजी उसे समझाते हुए बोले-''बेटा! एक पोशाक से मेरा काम नहीं चलेगा। मुझे तीस करोड़ पोशाकें चाहिए।

तीस करोड़ न मिले तो मैं अकेला कैसे पहन सकता हूँ?''

गांधीजी स्वयं कम खाते और कम पहनते, वे यहीं पर रुके नहीं। उन्होंने देश की जनता को संयम और सादगी का रास्ता दिखाया। वे देश को दरिद्र रखना नहीं चाहते थे। उन्होंने जनता का ध्यान लघु उद्योगों की ओर आकृष्ट किया। घर-घर में चरखा लाकर उन्होंने बेरोजगारी की समस्या का नया समाधान प्रस्तुत किया।

फिर कुछ नहीं होगा

प्रकृति का अनियंत्रित दोहन सीधा प्रलय को आमंत्रण है। प्राकृतिक स्थितियों में आये बदलाव से मनुष्य की सोच बदली है, पर आचरण नहीं बदला। जब तक उसकी आर्थिक दृष्टि स्वस्थ और संतुलित नहीं होगी, पर्यावरण संतुलित कैसे रहेगा?

पर्यावरण की समस्या किसी एक राष्ट्र की समस्या नहीं है। इससे पूरा विश्व प्रभावित हो रहा है। इस समस्या को अनेक कोणों से देखने और इसका स्थायी हल खोजने की जरूरत है। समय हमारे हाथ से निकलता जा रहा है। अभी कुछ नहीं हुआ तो फिर कुछ होने का भी नहीं है।

गृहस्थ जीवन में भी संयम रखा जा सकता है...
आचार्य श्री महाश्रमण का ज्ञानवर्धक प्रवचन सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

अणुविभा
संयमः खलु जीवनम्
संयम ही जीवन है।
नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT CREATIVITY CONTEST 2024
अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024
मुख्य विषय
व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण
प्रतियोगिताएं
चित्रकला
निबंध
गायन (एकल)
गायन (समूह)
भाषण
कविता
राष्ट्रीय विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार
स्तर-1 : कक्षा 3-8 स्तर-2 : कक्षा 9-12
सहभागिता
15+ राज्य 200+ शहर/कस्बे 1+ लाख बच्चे
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
https://anuvibha.org/acc acc@anuvibha.org
+91-91166-34514 +91-91166-34517
आयोजक
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

महान चिंतक, समाजसेवी तथा 'अणुव्रत पुरस्कार' से सम्मानित शिवाजी भावे द्वारा अणुव्रत आंदोलन के बारे में व्यक्त उद्‌गार

अणुव्रत आंदोलन के श्रेष्ठ पहलू

शिवाजी भावे

परमार्थ-सत्ता के अस्तित्व में जो संगठन या समुदाय बनता है, वह बड़ा मंगलकारी होता है। परमार्थ स्वयं मंगल होता है, वहाँ स्वार्थ की बात नहीं होती। अहिंसा और संयम की गंगा में गोता लगाने के लिए इतना विशाल जन-समुदाय यहाँ इकट्ठा हुआ है, इसलिए मुझे कहना चाहिए कि यह समुदाय मंगल की ओर एक-एक चरण बढ़ा रहा है।

अहिंसा और संयम के आचरण से अधिक मांगलिक कार्य और क्या हो सकता है? अतः मंगल या परमार्थ का जो पक्ष बलवान बन रहा है, वह शुभ का संकेत है और हमें इसके प्रसार के लिए प्रयास करना चाहिए। आचार्य श्री तुलसीजी इसके लिए प्रयत्नशील हैं। उनमें मैंने सामर्थ्य का अनुभव किया है। विद्या, त्याग और दार्शनिकता से अधिक उनमें एक और श्रेष्ठता है - वे अकारण स्नेह के स्रोत हैं। यह हमारे लिए गौरव का विषय है। मानव जीवन का सर्वोच्च ध्येय जीवन-शुद्धि है। मैं इसी ध्येय की पूर्ति के लिए अणुव्रत आन्दोलन को एक आवश्यक और उपयोगी कार्य मानता हूँ।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने एक ऐसा विचार रखा कि जो सद्‌विचार हमारे हृदय में अंकुरित हुए हैं, वे हमारे आचरण में आएं, किन्तु हमने उसका विपरीत अर्थ यह लगाया कि जो सद्‌विचार हमें मिले हैं, वे दूसरे को नहीं देने चाहिए। व्यायाम विद्या में पारंगत एक व्यक्ति अपनी विद्या दूसरे को नहीं बतलाएगा, चाहे उसके अवसान के साथ उसकी विद्या भी क्यों न समाप्त हो जाये। इस तरह हमारे समाज में ज्ञान और विद्या का संकोच होता गया। इसी तरह जाति आश्रित

ऊँच-नीच की भेद-भावना भी विचार-अनुदारता को बल पहुँचाती रही। अस्पृश्यता का भाव भी कम घातक नहीं रहा। इस तरह विचारों की संकोचशीलता के कारण जीवन-शुद्धि का मार्ग अवरुद्ध होता गया।

दूसरा विचार पाश्चात्य दार्शनिकों ने हमारे सामने यह रखा कि हमने जो सद्विचार ग्रहण किये हैं, उनका अधिकाधिक विस्तार करना चाहिए। किन्तु जीवन में उन्हें आचरित करके ही प्रसारित करना चाहिए, यह आग्रह उन्होंने नहीं रखा। भारतीय दर्शन का जीवन-सूत्र जहाँ 'आचारः प्रथमो धर्मः' रहा, वहाँ पाश्चात्य दार्शनिक इस जीवन-सूत्र को सामने रखकर न चले। इससे हुआ यह कि विचार-प्रसार को बल मिला, किन्तु आचार-पक्ष कमजोर और गौण बनता गया। इसी तरह वहाँ सिद्धान्तों के प्रसार की जबरदस्ती भी रही। एक हाथ में शास्त्र और दूसरे हाथ में शस्त्र की जहाँ स्थिति बनी, वहाँ विचार-प्रसार का आग्रह ही प्रमुख था। अणुव्रत आन्दोलन में ये दोनों बाधाएं नजर नहीं आती हैं। साम्प्रदायिक आग्रह वहाँ नहीं है, इसलिए विचार-अनुदारता को स्थान नहीं मिलता। सद्विचारों को जीवन में उतारने और भावना-प्रसार में हृदय-परिवर्तन का सिद्धान्त अपनाया जाता है, इससे उसमें आचार-अभाव और आक्रमणशीलता का भाव पनप नहीं पाता। ये दोनों अणुव्रत आन्दोलन के सर्वोपरि श्रेष्ठ पहलू हैं, जो इसके विकास का मंगल संकेत करते हैं।

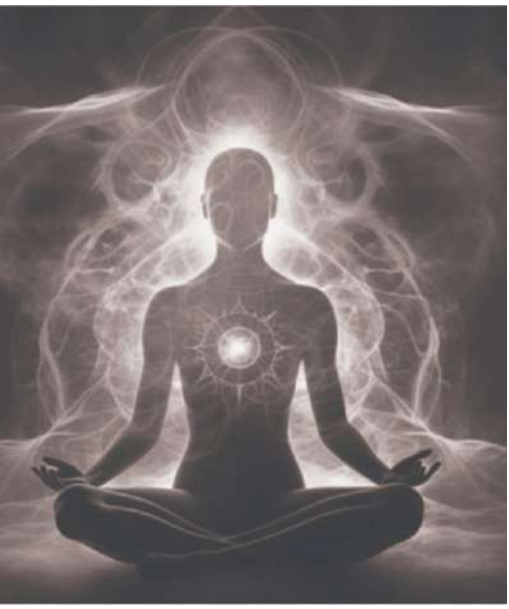

मन, शरीर और आत्मा के संयोग से व्यक्ति का निर्माण होता है। मन का स्वभाव रजोगुण, शरीर का स्वभाव

तमोगुण और आत्मा का स्वभाव मुक्ति है। रजोगुण और तमोगुण का अन्त हुए बिना जीवन-मुक्ति नहीं होती, अतः इन दोनों बाधाओं को मिटाने की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार पाँच सुविधाएं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह हैं, जो जीवन-शुद्धि के मूल तत्त्व हैं। इस तरह मैंने अनुभव किया है कि अणुव्रत आन्दोलन विचार-अनुदारता और आक्रमणशीलता से परे व्रतात्मक आन्दोलन है, जिसकी जीवन-शुद्धि के लिए महती आवश्यकता है।

मैं आशा करता हूँ कि यह आन्दोलन अधिकाधिक प्रसारित होगा और आचार्य श्री तुलसी का विराट व्यक्तित्व इस पुनीत कार्य में सफलता प्रदान करेगा।

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

आचार्य तुलसी का शिक्षा दर्शन

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

अणुव्रत आन्दोलन के प्रणेता, तपोपूत संत, विचक्षण दार्शनिक, महामना शिक्षाविद्, महामानव आचार्य तुलसी तप्तस्वर्ण व्यक्तित्व के धनी थे। उनका शिक्षा-दर्शन उनके जीवन-दर्शन का ही पर्याय था। उनकी दृष्टि में शिक्षा, जीवन-निर्माण की एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है। उनके शिक्षा-दर्शन में 'मानव कल्याण' प्रमुख घटक के रूप में विद्यमान है।

आचार्य तुलसी जन्मना शिक्षक थे, प्रकृत्या गुरुत्व के धनी थे और कर्मणा सतत ज्ञानान्वेषी थे। उनके सान्निध्य में रहने वाला शिष्य या शिक्षार्थी सतत विकासोन्मुख रहे, यही उनके शिक्षा-दर्शन का मूल मंत्र था। उनकी छत्रछाया में सैकड़ों विद्यार्थी, साधु-साध्वियों एवं समण-समणियों ने अपनी प्रतिभा का उन्मुक्त विकास किया।

आचार्य तुलसी के शिक्षा-दर्शन में 'जीवन' हेतु शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक है। मात्र जीविका के लिए शिक्षा, अधूरी शिक्षा है। उनका कहना है कि पढ़ा-लिखा युवक उस समय सघन कुंठा का शिकार हो जाता है जब वह जीविकोपार्जन में असफल हो जाता है? जीविका के पीछे वह जीवन को भूल जाता है।

'जीविका' की तलाश में प्रायः मूल्यहीनता के साथ समझौता करना पड़ता है। वहाँ जीवन मूल्य (मानवीयता, करुणा, मैत्री, मुदिता, सहअस्तित्व आदि) पिछड़ जाते हैं। शिक्षा का मंत्र 'सा विद्या या विमुक्तये' तिरोहित हो जाता है।

आचार्य तुलसी एक स्वतंत्रचेता, क्रान्तिधर्मा, प्रतिस्रोतगामी शिक्षा-दार्शनिक थे। उनका मानना था कि शिक्षा की सार्थकता, आस्था, संकल्प और आचरण की

युति में है। जिस शिक्षा में अनुशासन, धैर्य, सहअस्तित्व, जागरुकता आदि जीवन मूल्यों का विकास नहीं होता, उस शिक्षा की जीवन्त दृष्टि के आगे एक प्रश्न चिह्न उभर आता है। वही शिक्षा अपनी प्रासंगिकता को बनाये रख सकती है जो व्यक्ति निर्माण और सहजीवन की जरूरतों के अनुसार जीवनशैली का विकास कर पाये।

आचार्य तुलसी के अनुसार शिक्षा की परिधि में निम्नांकित उद्देश्य शामिल हैं –

- जीवन मूल्यों की शिक्षा
- मानवीय मूल्यों की शिक्षा
- भावात्मक विकास की शिक्षा
- सिद्धान्त और प्रयोग के समन्वय की शिक्षा

आचार्य तुलसी शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थी, शिक्षक, अभिभावक और समाज के चारों घटकों को महत्वपूर्ण मानते हैं। वे कहते हैं, कुएं से पानी निकालते समय केवल दो अँगुल रस्सी हाथ में रहती है तो भी पूरी रस्सी एवं पानी का डोल बाहर निकाला जा सकता है। पतंग आकाश में उड़ती है, उस समय हाथ में डोर का थोड़ा-सा हिस्सा रहता है। उसी के बल पर वह नभ की ऊँचाइयों को छूती है। उसी प्रकार जितना समय अभिभावकों एवं अध्यापकों की सन्निधि में व्यतीत होता है, उसका समुचित उपयोग किया जाये और अपने आचरणों-व्यवहारों को उदात्त रखा जाये तो बच्चों को सही ढंग से प्रशिक्षित किया जा सकता है। निष्कर्ष के रूप में इतना ही समझाा जाये कि केवल

किताबी शिक्षा पर्याप्त नहीं है। वास्तविक शिक्षा जीवन से मिलती है।

शिक्षा का व्यवहारपरक स्वरूप, निम्नांकित कौशलों को अर्जित करके प्राप्त किया जा सकता है –

- शिक्षा के द्वारा कार्य कौशल
- परिवार के द्वारा व्यवहार कौशल
- आनंदमय जीवन के लिए आचार कौशल

जो शिक्षा या विद्या, शांति, तुष्टि, पवित्रता एवं आनंद – चारों तत्त्वों का जीवन में संचार नहीं करती, वह वास्तव में शिक्षा नहीं, अशिक्षा है, विद्या नहीं, अविद्या है। आचार्यश्री के अभिमत में, अच्छे संस्कारों के अभाव में शिक्षा बहुआयामी लाभ नहीं दे सकती।

आचार्य तुलसी के शिक्षा-दर्शन में जड़ता का कोई स्थान नहीं। वहाँ सतत चैतन्य है। उनकी जीवन दृष्टि में शिक्षा में अध्यात्म और विज्ञान का मणिकांचन योग होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टि से वे अन्वेषक दृष्टि तथा आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मशक्ति, सत्यनिष्ठा, नैतिकता आदि मानवीय मूल्यों की संक्रांति का योग करना चाहते थे।

शिक्षा-पद्धति में वे शिक्षक की भूमिका को सबसे अधिक महत्व देते हैं। शिक्षा या विद्या का विपणन करने वाला, या मात्र वेतनभोगी शिक्षक उन्हें स्वीकार नहीं। शिक्षक का स्वयं का व्यक्तित्व मन-वचन-कर्म से अनुकरणीय होना चाहिए। वह विद्यार्थियों के लिए एक 'रोल मॉडल' होना चाहिए। आचार्य तुलसी अपनी कविता में एक आदर्श शिक्षक के बारे में कहते हैं –

वाणी से पहले जिसका व्यवहार, स्वयं जो बोल उठे
पुस्तक से पहले जिसका आचार, स्वयं जो बोल उठे
कार्यों से पहले जिसका संस्कार, स्वयं जो बोल उठे
जिसके संक्षेपी शब्दों में, विस्तार स्वयं जो बोल उठे
उससे बढ़कर फिर कौन, बच्चों का भाग्य विधाता है
अध्यापक स्वयं पढ़ाता है।

1949 से शुरू हुए अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष की यात्रा पर एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक वृत्तचित्र फिल्म देखने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

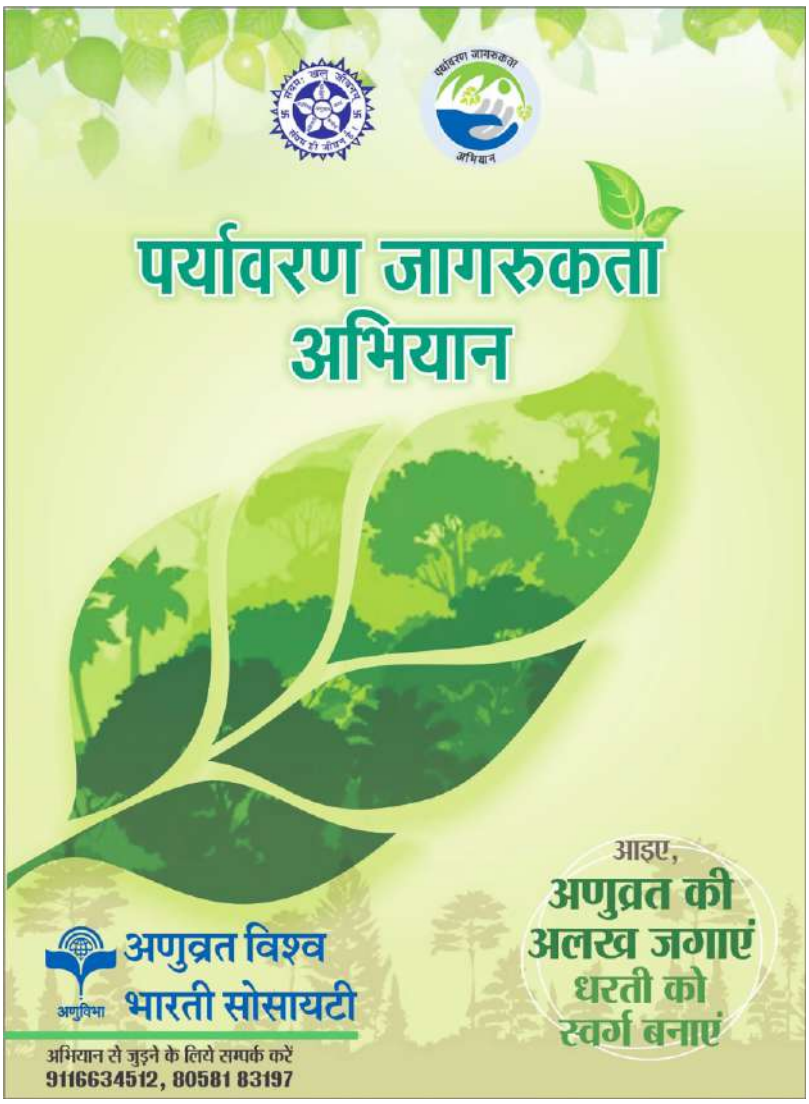

सामंजस्य

नंदन पंडित, गोण्डा

प्रधानाध्यापक कक्ष में बैठे रोमेश लिखते-लिखते अपने बाल नोच लेते। कभी रजिस्टर से दोनों आँखें मूँदते, कभी दोनों हथेलियों से। वे बेसिक शिक्षा विभाग के इस प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापक थे, किन्तु एकल अध्यापकीय विद्यालय होने के कारण विद्यालय का प्रभार भी उन्हीं के पास था। छत में टँगे पंखे की तरह उनका मस्तिष्क चक्कर काट रहा था।

कल सुबह से ही उनका मन खिन्न था। बहुत उत्साह से बच्चों को पढ़ाने चले थे। इतने में मोबाइल की घंटी बजी। ब्लॉक संसाधन केन्द्र से फोन था,''हेलो, मास्साब! तुम्हारा सांख्यिकी प्रपत्र नहीं जमा है।''

''मैंने एक महीना पहले ही जमा कर दिया था, आपको ही तो दिया था।''

''दिया होता तो मिलता न। आपने जमा नहीं किया।...और ड्रेस का उपभोग...?

'जी, यूनिफॉर्म उपभोग प्रमाण पत्र मेरे पास है।'

''इसी तरह सांख्यिकी प्रपत्र भी तुम्हारे ही पास होगा।

तत्काल दोनों कागजात लेकर आ जाओ, साहब तुरंत मिलना चाहते हैं।''

बच्चे कैसे पढ़ेंगे, जब अध्यापक सारा दिन बाबूगीरी करते फिरेंगे। उनके भविष्य का क्या होगा? कोई नहीं सोचता, सब केवल पैसों का जुगाड़ सोचते हैं। किस तरह अध्यापकों की कमी ढूंढ़कर उनसे कमाई की जाये, बस यही ध्येय है सबका। बच्चों के साथ कितना बड़ा अन्याय हो रहा है? भाँति-भाँति के चोंचलों के द्वारा उनके भविष्य के साथ कैसे खिलवाड़ किया जाता है? न, वे छुट्टी से पहले नहीं जाएँगे, चाहे मुख्यमंत्री स्वयं बुलाते हों।

काफी मंथन के पश्चात् वे जैसे-तैसे कक्षा में गये। बच्चों की संख्या न्यून थी। उन्होंने चार-पाँच होशियार छात्रों एवं रसोइया को कक्षा व स्कूल सौंप दिया और स्वयं अनुपस्थित छात्र-छात्राओं के अभिभावकों से सम्पर्क करने उनके घर चले गये। घंटों मजरों की खाक छानने के बाद एक दर्जन बच्चे मिले, जिन्हें जल्द आने को कहकर वे स्वयं विद्यालय चले आये।

वहाँ सफेद बोलेरो खड़ी थी। उस पर 'राज्य सरकार' लिखा देखकर वे कुछ विचलित-से हो गये। सामने कुर्सी पर खण्ड शिक्षाधिकारी महोदय थे। उन्होंने अभिवादन किया तो अधिकारी ने बदले में सवाल दाग दिया-''इतने टाइम विद्यालय आते हो मास्टर साहब?''

''न...नहीं सर। विद्यालय समय पर ही आया था, आज बच्चे कम थे तो उन्हीं को बुलाने गया था।''

''फर्जी नामांकन होगा तो बच्चे कैसे आएंगे?''

''न...नहीं सर।'' हकलाते हुए उन्होंने कुछ रुपये रसोइया को देकर अधिकारी के लिए जलपान लाने को भेजा।

''मास्टर साहब, इससे काम नहीं चलेगा। मैनेज करना सीखो। हमसे सामंजस्य बिठाना सीखो।''

''सर, सामंजस्य तो बिठाता हूँ।''

उनकी नासमझी पर साहब के साथ आया शख्स, जो स्वयं

एक शिक्षक था, से न रहा गया। वह खीसें निपोरकर बोला-''अरे, मास्साब! पाँच साल हो गये सर्विस में आये, मैनेज करना भी नहीं जानते। कुछ नोट-सोट बढ़ाओ, ऐसे थोड़े सामंजस्य बनता है।''

''सर, पैसा कहाँ से दूँ?''

''यह मैं नहीं जानता।'' कहकर सहयोगी सहित खण्ड शिक्षा अधिकारी उठ खड़े हुए।

लाचार रोमेश ने काँपते हाथों से दो हजार रुपये अधिकारी महोदय की ओर बढ़ा दिये। वह दो डग पीछे हट गये। सहयोगी बोला-''क्या कर रहे हो? अधिकारी को रिश्वत देते हो? लाओ मुझे दो।''

उन्होंने रुपये बढ़ा दिये। सहयोगी और अधिकारी में कानाफूसी हुई। सहयोगी ने रुपये फेंक दिये। काफी मान-मनौव्वल पर पाँच हजार रुपये में उनकी जान छूटी।

गाड़ी बढ़ गयी। उसके साइलेंसर से निकले धुएं के छल्ले के साथ उनका दिमाग भी घूम गया। उन्होंने ऑन दि स्पॉट, एट दि मोमेंट डिसीजन लिया। अब और इस विभाग में नहीं घुटना है। अपनी आत्मा नहीं मारनी है।

हेडमास्टर रूम में जाकर उन्होंने एक सादे कागज पर कुछ लिखा और फिर बाहर आकर स्वयं असेम्बली की बेल बजाने लगे। घंटी सुनते ही कुछ हर्षित कुछ विस्मित से बच्चे प्रार्थना स्थल पर इकट्ठे होने लगे। अधिकारी का दौरा सुनकर आसपास के एकाध अभिभावक भी आ गये थे। रूँधे गले से उन्होंने बोलना शुरू किया-''बच्चो! मुझे क्षमा करना।'' सभी बच्चे व गार्जियन चौकन्ने हो गये।

''मैं तुम लोगों के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाया। मैं अभी से यह विद्यालय और नौकरी छोड़ रहा हूँ।'' बोलते-बोलते उनकी आँखें पनिया गयीं।

क्षण भर में पूरे विद्यालय परिसर में रुदन व विषाद छा गया। छात्र-छात्राओं की मूक आँखों से याचना बरस रही थी। साहस बटोरकर कुछ बच्चों ने उन्हें चारों ओर से घेर

लिया। बच्चे एक साथ रोते हुए बोल पड़े-''सर जी, आप न जाओ। हम आपको जाने न देंगे।''

बच्चे और जोर से रोने लगे। वे भी उतने ही रोते जा रहे थे-''मुझे और पापी न बनाओ, जाने दो।''

खबर पूरे गाँव में जंगल की आग की तरह फैल गयी। अनेक अभिभावक अपना काम-धाम छोड़कर स्कूल में आ गये। उन्होंने उनके सामने हाथ जोड़ दिये-''हम सब आपकी इज्जत नहीं कर सके क्योंकि हम जाहिल थे। हमारे कर्मों की सजा इन नन्हे-मुन्हे बच्चों को न दो।''

''पाँच साल में ही हमारे बच्चों का चाल-चलन बदल गया। ये ढंग से उठना-बैठना और पढ़ना-लिखना सीख लिये।''

''आपके बाद ऐसा गुरु न मिलेगा। आपको अपने बच्चों की कसम।'' कई जुड़े हुए हाथ एक साथ हवा में लहरा उठे।

उन्होंने बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर कहा-''मुझे मत रोको। मैं आपके स्नेह व सम्मान का ऋणी हूँ। परन्तु...''

''परन्तु-वरन्तु कुछ नहीं। हम आपको यहाँ से जाने न देंगे।'' चारों ओर अभेद्य दीवार बनाये भीड़ ने दोहराया।

वे दुविधा में पड़ गये। एक नन्ही बच्ची उनका पैंट खींचकर भीगी आँखों से तुतलाकर बोली-''थलजी, मत दाओ!''

उनका कंठ भर आया। वेगवती भावनाएँ वे न रोक सके। उस लड़की को उठाकर चूम लिया। अगले पल लड़की को नीचे उतारकर उनका हाथ जेब के अंदर गया और चिन्दी-चिन्दी कागज के टुकड़े हवा में लहराने लगे।

काव्य-रस

अब इतिहास रचें मिल करके

■ प्रिया देवांगन 'प्रियू', गरियाबंद ■

स्वार्थ भरा जीवन क्या जीना, हँसकर समय बिताएँ।
नयीं उमंगें, नये तराने, सीखें और सिखाएँ।।
छोड़ो कल की बातों को तुम, ये तो हुईं पुरानी।
अब इतिहास रचें मिल करके, हो ये अमर कहानी।।

फूल खिले हर आँगन-गुलशन, मिले वक्त से रोटी।
मानवता को समझो सारे, रखो सोच मत छोटी।।
द्वेष भावना और हिंसा, तज दो इनकी राहें।
मानवता का दीप जलाकर, फैलाओ तुम बांहें।।

तप्त हृदय लेकर क्यों बैठे, जलते हैं अंगारे।
अपनेपन का मोल नहीं क्यों, हैं रिश्तों से हारे।।
करें माफ हम इक दूजे को, आओ गले लगाएँ।
मानव मन की इस बगिया को, मिल के हम महकाएँ।।

नहीं गाँठ पड़ने तुम देना, चलना सीधी रेखा।
रक्त रगों में इक सा बहता, ना करना अनदेखा।।
हम चौरासी भोग लिये, अब मानव तन है पाया।
सतयुग फिर से लाना है, हमने है स्वप्न सजाया।।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

द्वारा

अपने गौरवशाली प्रकाशन राष्ट्रीय बाल मासिक

बच्चों का देश

की रजत जयंती के अवसर पर आयोजित

बाल साहित्य समागम

बाल-साहित्य सृजन विमर्श

स्कूली बच्चों के साथ संवाद

बालोदय दीर्घा अवलोकन

काव्य गोष्ठी

सम्मान व स्मृति-चिन्ह

16-18 अगस्त, 2024

आयोजन स्थल

चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमंद

राजस्थान

अणुव्रत अमृत विशेषांक

पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'।

अणुव्रत अमृत विशेषांक के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। आप सब के स्नेह व समर्थन के हम हृदय से आभारी हैं।

अणुव्रत दर्शन के प्रसार में सहायक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के अवसर पर प्रकाशित अणुव्रत पत्रिका के 'अणुव्रत अमृत विशेषांक 2024' की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पुस्तक में अणुव्रत आंदोलन के दौरान किये गये रचनात्मक कार्यक्रमों का सजीव चित्रण सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि पुस्तक पाठकों के लिए अणुव्रत दर्शन के संबंध में ज्ञानवृद्धि में उपयोगी सिद्ध होगी।

– **आनंदीबेन पटेल**, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

अमृत घट के तुल्य

अहिंसा एवं नैतिक चेतना की प्रतिनिधि पत्रिका 'अणुव्रत' का अमृत विशेषांक प्राप्त हुआ। लगभग 500 पृष्ठ के इस महा-विशेषांक में अध्यात्म-ज्ञान के साथ जीवन से जुड़े

विषयों पर विद्वतजन के महत्वपूर्ण लेख समाहित हैं। कुल मिलाकर अगर कहूं तो अतिशयोक्ति न होगी कि यह विशेषांक एक अमृत घट के तुल्य है। जो भी इसका रसपान करेगा और सम्पूर्ण न सही कुछ बूँद मात्र भी अपने भीतर अगर समाहित करेगा तो उसके जीवन का मंगल निश्चित है। यह विशेषांक संग्रहणीय तो है ही, जीवन को सही दिशा, विचारों को सही गति प्रदान करने के साथ ही हम जीवन में कैसे अणुव्रत को धारण कर एक सुसंस्कृत समाज निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं, इस संबंध में मार्ग प्रशस्त करेगा। इस साहित्यिक अनुष्ठान में मुझे भी शामिल करने हेतु संपादक आदरणीय संचय जैन सर एवं मोहन मंगलम जी का आभार।

– **डॉ. लता अग्रवाल**, भोपाल

सहेजने योग्य विशेषांक

अणुव्रत पत्रिका का अमृत विशेषांक मानवीय भावों को पोसने वाली सामग्री लिये है। जीवनशैली से लेकर आत्मीय धरातल तक सभी विषयों को छूते लेख, विचार और गुरुजनों के अनमोल वचन इसे एक सहेजने योग्य अंक बनाते हैं। अपने-आप में एक पूर्ण-सम्पूर्ण अंक बनाती सामग्री का संकलन सचमुच सराहनीय है। लुप्त होती चेतना और चारित्रिक बल के वर्तमान दौर में ऐसी सामग्री मन-जीवन को दिशा देने वाली है। हर मोर्चे पर छीजते जीवन मूल्यों के बीच कुछ सहेज लेने के सुंदर प्रयास के समान। समाज में मौजूद आडम्बरों के विरोध से लेकर विश्व शांति को बढ़ावा देने वाले विचारों तक, बहुत कुछ इस विशेषांक के पन्नों में समाया है। 'भावपूर्ण जुड़ाव से बचेगी मानवता' लेख के माध्यम से इस सार्थक अंक में भागीदारी करने का मुझे सौभाग्य मिला है। अणुव्रत पत्रिका के समृद्ध-सार्थक अंक के लिए पूरी टीम को बधाई, शुभकामनाएं।

– **डॉ. मोनिका शर्मा**, मुंबई

असीम ऊर्जा से ओतप्रोत

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' में 9 खंड नौ दुर्गा जैसे हैं और जब नौ दुर्गा एकाकार हो जाती हैं तो शक्ति पुंज बन जाती हैं तथा तेज व ऊर्जा का संचार होने लगता है। ठीक वैसे ही 9 खंडों से मिलकर यह असीम ऊर्जा से ओतप्रोत 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' बना है। हर भाग को पढ़ते हुए ऐसा महसूस होने लगता है जैसे जीवन में संभावनाओं के द्वार खुले पड़े हैं। हमें तो महज अपने सत्कर्मों से उसमें प्रवेश करने की जरूरत है। विशेषांक का संपादकीय अणुव्रत आंदोलन के आधारभूत सिद्धांतों के प्रसार को बढ़ावा देता है। विशेषांक के नौवें और अंतिम खंड तक पहुँचते-पहुँचते ऐसा एहसास होने लगता है जैसे अमृत पान कर लिया हो। वैचारिक शुद्धता आ गयी हो। अंत में यही कह सकती हूँ कि अणुव्रत अमृत विशेषांक को पढ़ें और जीवन में आगे बढ़ें।

– **डॉ. नीलम जैन**, बीकानेर

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

नयी पीढ़ी के जीवन को मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए
पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

आचार्यश्री का दीक्षा कल्याण महोत्सव संपन्न

जन्म से अजन्म की दिशा में आगे बढ़ने का हो प्रयास : आचार्य महाश्रमण

जालना। अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की दीक्षा के 50वें वर्ष का समापन समारोह 17 मई से 22 मई तक आयोजित किया गया। इस दौरान देशभर से पहुँचे श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्यप्रवर को अभिवंदना स्वरूप आध्यात्मिक उपहार अर्पित करते हुए विभिन्न संकल्प ग्रहण किये।

आचार्यश्री महाश्रमणजी का 63वां जन्मोत्सव 17 मई को महाराष्ट्र के जालना की धरती पर नव्य-भव्य रूप में समायोजित हुआ। इस अवसर पर पावन संबोध प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा कि मानव जीवन जो हमें प्राप्त हुआ है, उसमें कुछ अच्छा करने का प्रयास होना चाहिए। जन्म से अजन्म की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करें, यह हम सभी के लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

समारोह के दूसरे दिन 18 मई को 15वें पट्टोत्सव समारोह में आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि आज मुझे दायित्व मिले चौदह वर्ष पूर्ण हो गये हैं। आगे कालमान बढ़ रहा है। हम अध्यात्म की साधना को पुष्ट बनाने का प्रयास करते रहें। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि पूज्यप्रवर के सफल नेतृत्व में धर्मसंघ निरंतर विकास कर रहा है। आपने आचार्यश्री को नयी पूंजणी उपहृत की। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने कहा कि आचार्यप्रवर अपने पदाभिषेक के इन चौदह वर्षों में वीतरागता की मनोज्ञ मूरत बन गये हैं। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि हमें आचार्यजी जैसे संतों के निर्देशों व प्रेरणाओं पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

समारोह के तीसरे दिन 19 मई को साधु-साध्वियों तथा श्रावक समाज ने वक्तव्य, गीत, काव्य पाठ द्वारा अपने गुरु की वर्धापना की। 20 मई को आचार्य श्री महाश्रमण ने प्रवचन में कहा कि साधु जीवन प्राप्त होना बड़े भाग्य की बात होती है। कैसी भी परिस्थिति आये, कभी शरीर भी छूट जाये, किन्तु साधुत्व न छूटे, ऐसा प्रयास करना चाहिए। गृहस्थों के जीवन में सद्भावना, कार्य में नैतिकता और जीवन पर्यन्त नशामुक्तता रहे। धर्म के पथ पर चलते रहें।

महोत्सव के पाँचवें दिन 21 मई को नगर भ्रमण के उपरान्त प्रवास स्थल पर पधारे आचार्य श्री महाश्रमण ने पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि किसी घटना से अभिप्रेरित होकर भी आदमी संयम के पथ पर चलने को तत्पर हो सकता है। जीवन में दीक्षा लेना तो बड़ी बात होती ही है, संयम का जीवन प्राप्त कर उसे अंतिम श्वास तक निभा देना और भी बड़ी बात होती है। संयम का खण्डन न हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, 22 मई, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष की सम्पन्नता का शिखर दिवस। इस अवसर पर आचार्यश्री ने

कहा कि संन्यास व साधुता इतनी बड़ी चीज है कि उसके सामने भौतिक सुविधाएं नाकुछ के समान होती हैं। आचार्यश्री ने समस्त मानव जाति के लिए सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की तथा चतुर्विध धर्मसंघ को शुभाशीष प्रदान किया।

इससे पहले साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा, मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार और साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा ने 'संवाद महाश्रमण भगवान से' कार्यक्रम की प्रस्तुति दी तो पूरा वातावरण आध्यात्मिकता से आप्लावित हो उठा। साध्वी समाज की ओर से रजोहरण, प्रमार्जनी व दीक्षा कल्याण महोत्सव का एलवान भी गुरुचरणों में समर्पित किया गया जिसे मुख्यमुनिश्री ने गुरुदेव को धारण करवाया। साध्वीवृंद ने मंगल मंत्रों का संगान किया।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण ने करोड़ों लोगों को नशामुक्ति का संकल्प कराया। आपका कार्य समस्त मानव के कल्याण के लिए है। जालना के सांसद व रेलवे एवं कोयला राज्यमंत्री रावसाहेब दानवे ने भी विचार व्यक्त किये। आचार्य श्री महाश्रमण के मंगलपाठ से छह दिवसीय दीक्षा कल्याण महोत्सव सम्पन्न हुआ।

अणुव्रत चुनावशुद्धि अभियान

लोकसभा चुनाव में मतदाताओं को किया जागरूक

अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में लोकसभा चुनाव के दौरान चुनाव शुद्धि अभियान के तहत **गाजियाबाद अणुव्रत समिति** द्वारा 21 अप्रैल को नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। इस अवसर पर अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, सूर्यनगर निगम पार्षद कृष्ण शशि खेमका आदि ने चुनावशुद्धि अभियान पर विचार रखे। दीपिका नाहाटा द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति को सभी ने खूब सराहा।

अणुव्रत समिति दिल्ली की ओर से 18 मई को यमुना क्रीड़ा स्थल विवेक विहार में अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में लोगों से अपील की गयी कि आवश्यक रूप से मताधिकार का प्रयोग करके राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनें। **गुवाहाटी अणुव्रत समिति** ने अनोखी पहल करते हुए विभिन्न स्थानों पर 'मेरा एक वोट-राष्ट्र का सही निर्माण' नामक नाटिका का मंचन किया। इसके माध्यम से लोगों को संदेश दिया गया कि मतदान करें एवं राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वहन करें। साथ ही दूसरों को भी मतदान के लिए प्रेरित करें।

चिकमंगलूर, धुबड़ी, फारबिसगंज, ग्रेटर सूरत, अहमदाबाद, जोधपुर, हावड़ा, सिलीगुड़ी, इंदौर और झाबुआ अणुव्रत समिति की ओर से भी मतदाताओं में जागरुकता के लिए कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अणुव्रत कार्यकर्ताओं का सम्मान

राजसमंद। अणुविभा मुख्यालय पर 25 अप्रैल को अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान समारोह का आयोजन अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा के मुख्य आतिथ्य एवं अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में किया गया। समारोह में डॉ. महेन्द्र कर्णावट, जीतमल कच्छारा, अशोक डूंगरवाल तथा मदन धोका को 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के अवसर पर किये गये अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान के क्रम में स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन के 75 वर्षों के गौरवशाली इतिहास में अनेकानेक समर्पित कार्यकर्ताओं ने आचार्य तुलसी के दर्शन 'संयम ही जीवन है' को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। उन्होंने अणुव्रत के महारथी स्व. देवेन्द्रभाई कर्णावट एवं स्व. मोहनभाई को भी याद किया।

अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा ने कहा कि किसी भी बड़े काम में नींव के पत्थर सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। अणुव्रत आंदोलन को सींचने में भी अनेक समर्पित कार्यकर्ताओं का श्रम है। अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि राजसमन्द अणुव्रत दर्शन की प्रयोगशाला है। नयी पीढ़ी में सद्संस्कारों के जागरण में बालोदय जैसे प्रकल्प मील का पत्थर सिद्ध हो रहे हैं।

इस अवसर पर अणुविभा के उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया, गणेश कच्छारा, सह मंत्री जगजीवन चौरड़िया, डॉ. सीमा कावड़िया, रमेश माण्डोत आदि उपस्थित थे।

अणुविभा मुख्यालय में बालोदय शिविर

राजसमंद। अणुविभा मुख्यालय में 9 से 11 मई तक बालोदय शिविर का आयोजन किया गया। इसमें श्री कृष्णा पब्लिक सेकण्डरी स्कूल बदनोर भीलवाड़ा के बच्चों के साथ ही उनके अध्यापक और अभिभावक भी शामिल हुए। इस दौरान अणुविभा की स्कूल विद ए डिफरेंस (स्वाद) प्रायोजना के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने बच्चों को अणुव्रत आचार संहिता के अनुसार अपनी जीवनशैली बनाने की प्रेरणा दी। शिविर के दौरान योग सत्र में बालोदय प्रकल्प की संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया ने जीवन विज्ञान के विविध प्रयोगों के अभ्यास द्वारा बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति संचेतित किया, वहीं चिकित्सक व अणुविभा के उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने बच्चों को स्वास्थ्य की रक्षा व चुस्त-दुरूस्त बने रहने हेतु जरूरी टिप्स दिये।

कलावंत शिक्षा सेवी कमल सांचीहर ने अक्षरों से बनने वाले चित्रों की जानकारी देकर बच्चों की आंतरिक कलागत वृत्ति को प्रेरित किया। डॉ. विनीता पालीवाल ने बुद्धि कौशल विकास पर बच्चों से रोचक संवाद किये। विद्यालय के संचालक संस्था प्रधान गोविद सिंह ने कहा कि वे अणुविभा के साथ मिलकर अपने विद्यालयों में ऐसा शिविर आयोजित करना चाहते हैं।

इससे पहले अणुविभा मुख्यालय में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के 30 बालक-बालिकाओं व

अध्यापक-अध्यापिकाओं का एक दिवसीय बालोदय शिविर 16 मार्च को तथा प्रगति सीनियर सेकण्डरी स्कूल, एमड़ी के 24 बालक-बालिकाओं व अध्यापक-अध्यापिकाओं का एक दिवसीय बालोदय शिविर 20 अप्रैल को आयोजित किया गया।

देशभर में 182 जीवन विज्ञान प्रशिक्षकों की टीम हुई तैयार

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला के सफल प्रशिक्षकों का प्रमाण-पत्र वितरण समारोह 10 मई को ऑनलाइन आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने देशभर में 182 जीवन विज्ञान प्रशिक्षकों की नयी टीम तैयार करने के लिए मास्टर ट्रेनर राकेश खटेड़ तथा उनके सहयोगी प्रशिक्षकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर देश की भावी पीढ़ी को संस्कारित करते हुए जीवन विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना है।

मास्टर ट्रेनर राकेश खटेड़ ने प्रमाण-पत्र धारक प्रशिक्षकों

से कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोग न केवल विद्यार्थियों के लिए अपितु समाज के प्रत्येक नागरिक के लिए उपयोगी हैं। अतः आप अपने परिचित साथियों, इष्ट मित्रों को भी इसके प्रयोगों का अभ्यास करवा सकते हैं।

अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा एवं निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि जो गति जीवन विज्ञान ने पकड़ी है, वह निश्चित ही शुभ भविष्य की सूचक है। इससे पहले प्रशिक्षक हनुमानमल शर्मा द्वारा जीवन विज्ञान गीत की प्रस्तुति से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अणुविभा की उपाध्यक्ष तथा जीवन विज्ञान प्रभारी माला कातरेला ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय सह-संयोजक कमल बैंगानी ने बताया कि अभी लगभग 28 प्रशिक्षकों को सांकेतिक रूप से प्रमाण-पत्र दिये जा रहे हैं। शेष प्रमाण-पत्र शीघ्र ही दे दिये जाएंगे। ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रभारी रीना गोयल ने आभार ज्ञापन किया।

मुम्बई और गाजियाबाद में

अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा 13 मई की शाम अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन विष्णुदास भावे नाट्यगृह वाशी में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में किया गया। जोधपुर से समागत कवयित्री आयुषि राखेचा ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। नाथद्वारा से समागत कवि कानू पंडित ने अपनी काव्य रचना के माध्यम से बताया कि काम, क्रोध, लोभ को छोड़ना एवं हिंसा से दूर रहकर संयमित जीवन जीना सिखाता है अणुव्रत। मावली उदयपुर से आये कवि मनोज गुर्जर ने कहा कि अणुव्रत के सिद्धांतों को अपनाकर शांतिप्रिय जीवन जी सकते हैं। इंदौर से आये मुकेश मोलवा ने वीर रस एवं देशभक्ति पर रचनाएं प्रस्तुत कीं। शाजापुर मध्यप्रदेश से आये दिनेश देसी घी ने छोटे-

छोटे उदाहरणों से अणुव्रत के नियमों पर सारगर्भित प्रस्तुति दी। कवि सम्मेलन का सफल संचालन केकड़ी से आये कवि बुद्धिप्रकाश दाधीच ने किया।

गाजियाबाद अणुव्रत समिति ने अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन 12 मई को केबीसी बैंक्वेट हॉल सूर्यनगर में किया। प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. कीर्ति काले के संचालन में आयोजित कवि सम्मेलन में वीर रस के कवि गजेन्द्र सोलंकी ने अणुव्रत आचार संहिता पर आधारित रचनाओं की प्रस्तुति दी। डॉ. कीर्ति काले ने जब अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जीवन पर आधारित रचना सुनायी तो श्रोता भाव विभोर होकर आचार्यश्री के सम्मान में अपने स्थानों पर खड़े हो गये तथा करतल ध्वनि से सभागार को गुंजायमान कर दिया। कवयित्री प्रियंका राय ने नारी जागृति पर काव्य पाठ किया। ओमप्रकाश कल्याणे के हास्य व सुधा संजीवनी की काव्य रचनाओं को सभी ने खूब सराहा। निकिता बेगवानी व रिद्धि अग्रवाल ने भी कविताएं पढ़ीं। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष कुसुम सुराणा ने आभार ज्ञापन किया।

इससे पहले अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा की मंगलकामनाओं से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में गाजियाबाद जिला अधिकारी इंद्र विक्रम सिंह, निगम पार्षद कृष्ण शशि खेमका, वन विभाग के अधिकारी विकास सिंटोरिया, अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, काव्यधारा के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. धनपत लुनिया आदि की उपस्थिति रही।

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

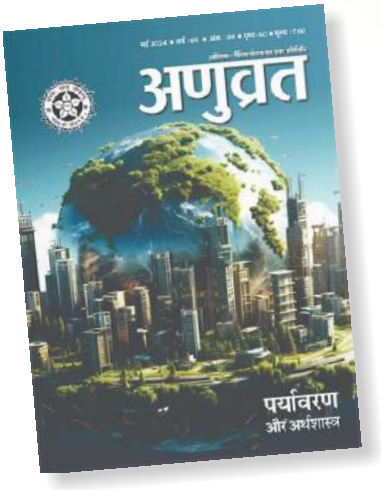

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय, प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 69 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

वार्षिक	–	₹ 750
त्रैवर्षीय	–	₹ 1800
पंचवर्षीय	–	₹ 3000
दसवर्षीय	–	₹ 6000
योगक्षेमी	–	₹ 15000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती के दो प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के बारे में जानकारी के लिए वीडियो पर क्लिक करें :